तेल उद्योग विकास बोर्ड

(पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय)

अनुभूति

राजभाषा पत्रिका अंक 20

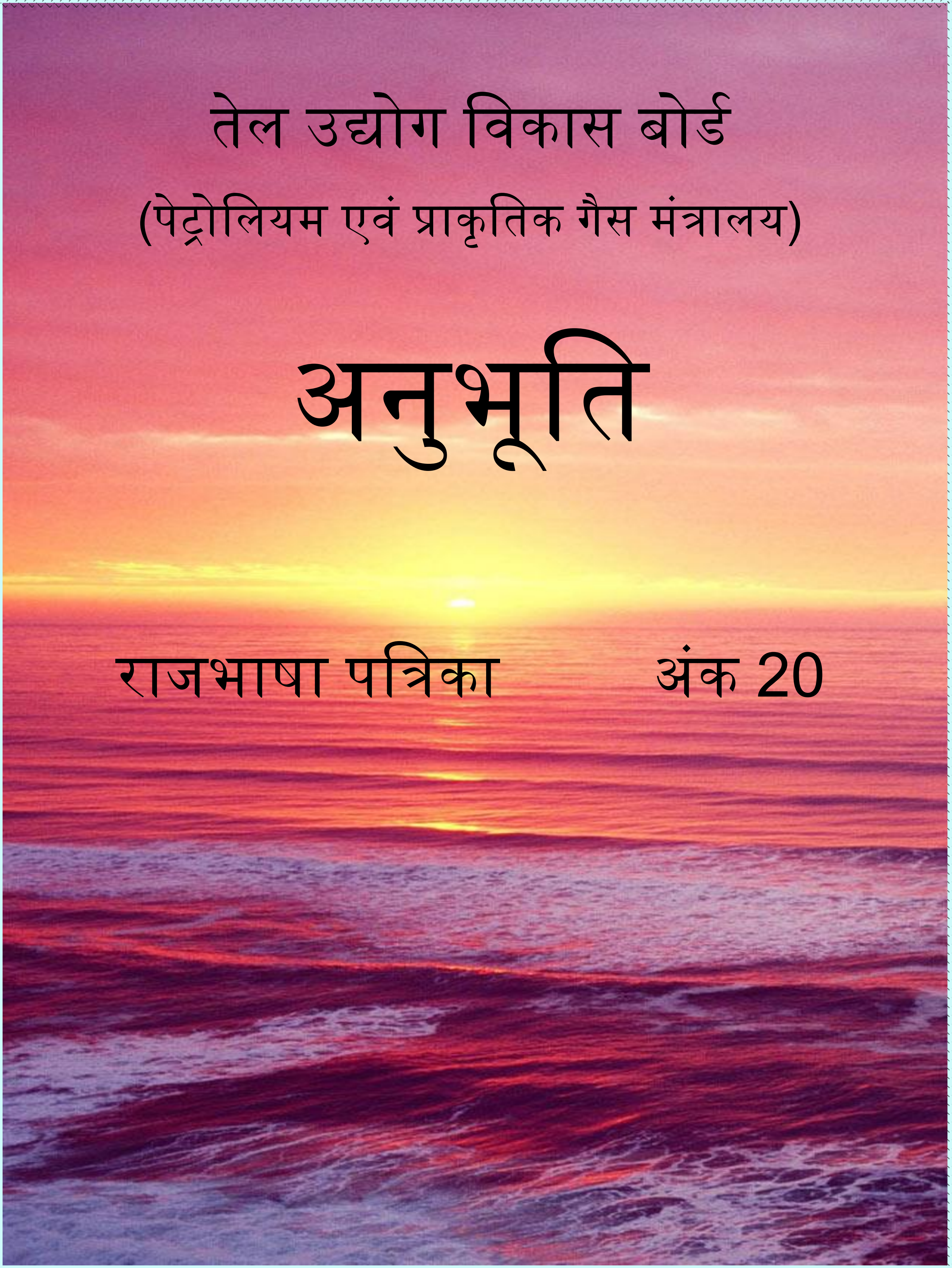

राजभाषा कीर्ति पुरस्कार वर्ष 2022–23

अनुभूति अंक 20

संरक्षक

श्रीमती वर्षा सिन्हा

(सचिव, तेल उद्योग विकास बोर्ड एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति)

संपादक मंडल

श्री कपिल वर्मा

(वित्त सलाहकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी)

श्री राजेश सैनी

(उप मुख्य वित्त एवं लेखा अधिकारी)

श्री संजय कश्यप

(प्रबंधक –कार्मिक एवं प्रशासन एवं प्रभारी उप मुख्य वित्त एवं लेखा अधिकारी)

संपादक

श्रीमती ज्योति शर्मा

(हिन्दी अधिकारी)

संपादन सहयोग

श्री महेन्द्र प्रताप सिंह (डीओ)

संपादकीय

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि तेल उद्योग विकास बोर्ड प्रति वर्ष अपनी राजभाषा गृह पत्रिका "अनुभूति" का प्रकाशन करता है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा स्थापित नीति एवं समय-समय पर जारी दिशा-निर्देशों का अनुपालन करना हम सभी का नैतिक एवं संवैधानिक उत्तरदायित्व है। तेल उद्योग विकास बोर्ड इस उत्तरदायित्वों का पालन करने में प्रयासरत है। इन्हीं प्रयासों में एक, राजभाषा पत्रिका का प्रकाशन भी है। पत्रिका के माध्यम से तेल उद्योग विकास बोर्ड में कार्यरत कार्मिकों को अपने विचारों को प्रकट करने और अनुभवों के आदान-प्रदान करने का अवसर प्राप्त होता है।

इसी क्रम में राजभाषा गृह पत्रिका "अनुभूति" का 20वां अंक आप सबके समक्ष रखते हेतु अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। तेल उद्योग विकास बोर्ड अपने उद्देश्य एवं लक्ष्यों को पूरा करने के साथ-साथ राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए विशिष्ट भूमिका निभा रहा है। 'अनुभूति' पत्रिका के इस अंक में कार्मिकों ने कविताओं, कहानियों और लेखों के माध्यम से अपने अनुभव, भावनाएं व्यक्त की हैं।

तेल उद्योग विकास बोर्ड के सभी कर्मिक हिन्दी कार्यान्वयन को नई दिशा एवं गति प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं और पत्रिका के इस अंक में सभी ने अपना सहयोग दिया है। अनुभूति पत्रिका में प्रकाशित ज्ञानवर्द्धक एवं सुरूचिपूर्ण लेखन सामग्री देने के लिए प्रबुद्ध लेखकों का विशेष आभार। आशा है अनुभूति का यह अंक आप सभी को पसंद आएगा।

"प्रतिभाओं को निखरने के लिए आधार मिलना चाहिए।
हर अनुभव को एक नया रंग मिलना चाहिए।
अनुभव को साकार करने के लिए मंच मिलना चाहिए।
अनुभूति के इस अंक को आप का प्यार मिलना चाहिए।"

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय सूची	पृष्ठ सं.
	सचिव की कलम से संपादकीय	
1	लेख कचरा मुक्त भारत विकास का पर्यावरण पर प्रभाव आशाएँ कैसे पूरी हो? हिन्दी के कार्यान्वयन में वाइस टाइपिंग का महत्व आत्म संतुष्टि चमत्कारी पौधाः तुलसी सुपर फूड: मिलेट्स	7-19
2	प्रेरक प्रसंग एक रुपया ईमेल आईडी कर्मों का लेखा-जोखा वर्तमान जीवन का आनंद लो	20-25
3	कविताएं अखण्ड भारत पॉलिथीन से नुकसान पेड़ लगाएँ, पर्यावरण बचाएँ काश मैं बन सकता कूटने से बढ़ती है - "इम्युनिटी पॉवर"*	26-31
4	विविध	32-44

"अनुभूति" पत्रिका प्रतिवर्ष तेल उद्योग विकास बोर्ड (तेउविबो), प्लॉट सं0.2, सेक्टर 73, नोएडा से प्रकाशित की जाती है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों के कथनों और मतों के लिए बोर्ड उत्तरदायी नहीं है।

सचिव की कलम से

भाषा संप्रेषण का सशक्त माध्यम होती है। हिंदी हमारे देश की एकता की वह कड़ी है जिसने सदियों से देश के बहुभाषी लोगों को एक सूत्र में पिरो कर रखने का काम किया है। हिंदी हमारे देश में केवल संवैधानिक दृष्टि से ही नहीं अपितु सामाजिक एवं व्यावसायिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। राज–काज की भाषा में भी संप्रेषणीयता अनिवार्य है। यही कारण है कि संविधान निर्माता ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया। राजभाषा विभाग, भारत सरकार प्रतिबद्धता के साथ राजभाषा के प्रचार प्रसार के लिए निरंतर कार्यरत है और प्रति वर्ष हिन्दी दिवस के अवसर पर राजभाषा के सर्वश्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए मंत्रालयों/संगठनों/संस्थाओं को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार से सम्मानित करती है।

हर्ष का विषय है कि इस वर्ष भारत सरकार के" क "क्षेत्र में स्थित बोर्ड/स्वायत निकाय/ट्रस्ट/ सोसाइटी आदि के बीच राजभाषा कीर्ति पुरस्कार योजना के अन्तर्गत तेल उद्योग विकास बोर्ड को द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इससे पूर्व भी तीन बार यह पुरस्कार ओआईडीबी प्राप्त हो चुका है। इसके अतिरिक्त इस वर्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, नोएडा द्वारा भी तेल उद्योग विकास बोर्ड को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया इसके लिए ओआईडीबी के सभी अधिकारी/कर्मचारी बधाई के पात्र हैं। स्पष्ट है कि ओआईडीबी अपने मूल उद्देश्य के साथ-साथ संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के प्रति पूरी तरह से प्रतिबद्ध है। बोर्ड, प्रति वर्ष अपनी राजभाषा पत्रिका "अनुभूति" का प्रकाशन भी करता है। अनुभूति के इस नवीन अंक के प्रकाशन पर मैं सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को बधाई देना चाहती हूं। साथ ही सरकार ने केंद्रीय कर्मचारी होने के नाते हमें हिंदी को बढ़ावा देने उसके प्रचार-प्रसार करने की जो महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी है हम उसे पूरा करने का प्रयास कर रहें हैं।तो आइए हम सब मिलकर हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने का संकल्प करें।

शुभकामनाओं सहित

वर्षा सिन्हा
सचिव, तेल उद्योग विकास बोर्ड /
एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

तेल उद्योग विकास बोर्ड के लक्ष्य एवं उद्देश्य

- तेल उद्योग विकास निधि का प्रबंधन।
- तेल उद्योग के विकास के लिए वित्तीय तथा अन्य सहायता देना।
- निम्नलिखित कार्यकलापों के लिए अनुदान एवं ऋण और इक्विटी निवेश में सहायता देनाः-
    - भारत के भीतर अथवा बाहर खनिज तेल की संभावनाओं की खोज एवं अन्वेषण करने
    - कच्चे तेल के उत्पादन, संचालन, भंडारण और परिवहन की सुविधाओं की स्थापना
    - पेट्रोलियम और पेट्रोलियम उत्पादों के परिशोधन एवं विपणन
    - पेट्रोरसायन और उर्वरकों के निर्माण और विपणन
    - वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकीय तथा आर्थिक अनुसंधानों, जो तेल उद्योग के लिए प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से उपयोगी हो।
    - तेल उद्योग के किसी भी क्षेत्र में प्रयोगात्मक या प्रायोगिक अध्ययन।
    - तेल उद्योग में लगे या तेल उद्योग में लगने वाले किसी भी क्षेत्र के अन्य कामों में लगे कर्मियों को भारत में या विदेशों में प्रशिक्षण तथा अन्य विहित उपायों के लिए।

भारतीय संविधान

अनुच्छेद 351

हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश--

संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्तानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।

लेख

कचरा मुक्त भारत

कचरा प्रदूषण एक वैश्विक समस्या है। भारत, दुनिया का दूसरा सबसे अधिक आबादी वाला देश होने के नाते, इस समस्या का सामना कर रहा है। देश में प्रतिदिन टनों में कचरा उत्पन्न होता है, जिसमें से केवल 60% का ही पुनर्चक्रण किया जाता है। शेष लैंडफिल, जल निकायों और सड़कों पर समाप्त हो जाता है, जिससे मिट्टी का क्षरण, जल प्रदूषण और समुद्री जीवन को नुकसान होता है। इस बार सरकार का मिशन कचरा मुक्त भारत एक सराहनीय प्रयास है। वास्तव में कचरा मुक्त भारत की संकल्पना सिर्फ एक परिकल्पना नहीं, बल्कि एक आवश्यकता है। कचरे का निपटान एक गंभीर चिंता का विषय बनता जा रहा है, जगह जगह कुड़े के पहाड़ खड़े होते जा रहे हैं जो हमारे पर्यावरण, पारिस्थितिकी तंत्र और स्वास्थ्य को गंभीर नुकसान पहुंचा रहे हैं।

कुछ कचरा जैसे प्लास्टिक बायोडिग्रेडेबल नहीं है; यह माइक्रो प्लास्टिक नामक छोटे कणों में टूट जाता है, जिसे जानवर और समुद्री जीव खा लेते हैं और खाद्य श्रृंखला में प्रवेश कर जाते हैं। खाद्य शृंखला में सबसे ऊपर होने के कारण, मनुष्यों को इन हानिकारक कणों के अंतर्ग्रहण का खतरा होता है, जिससे कैंसर, अंतःस्रावी व्यवधान और अन्य पुरानी बीमारियों जैसे संभावित स्वास्थ्य खतरे पैदा होते हैं।

कचरा मुक्त भारत का विज़न

इन चिंताजनक तथ्यों के सामने, कचरा मुक्त भारत का दृष्टिकोण न केवल एक महान विचार है बल्कि अस्तित्व के लिए अनिवार्य है। इस दृष्टि में एक रैखिक अर्थव्यवस्था से एक संक्रमण शामिल है, जहां हम संसाधनों को 'लेते हैं, बनाते हैं, निपटान करते हैं', एक चक्रीय अर्थव्यवस्था में, जहां अपशिष्ट को कम से कम किया जाता है, और संसाधनों का

लगातार पुन: उपयोग और पुनर्चक्रण किया जाता है। भारत सरकार ने कचरा प्रदूषण की समस्या को पहचाना है और इसके शमन की दिशा में कई कदम उठाए हैं। प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 और एकल-उपयोग प्लास्टिक पर राष्ट्रव्यापी प्रतिबंध इसके प्रमुख उदाहरण हैं। हालाँकि, प्रभावी कार्यान्वयन और सख्त विनियमन अभी भी एक चुनौती है।

हालाँकि नीतिगत परिवर्तन महत्वपूर्ण हैं, वास्तविक परिवर्तन व्यक्तिगत और सामुदायिक कार्यों में निहित है। कचरा मुक्त भारत में बदलाव के लिए मानसिकता में बदलाव की आवश्यकता है, जहां प्रत्येक नागरिक कचरा के उपयोग के निहितार्थ को समझता है और इसे कम करने के लिए सचेत कदम उठाता है। यह खरीदारी के लिए कपड़े का थैला ले जाने, एकल-उपयोग कचरा से इनकार करने या स्रोत पर ही कचरे को अलग करने जितना आसान हो सकता है।

कचरा मुक्त भारत हासिल करने में तकनीकी प्रगति भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बायोडिग्रेडेबल सामग्रियों, रीसाइक्लिंग प्रौद्योगिकियों और अपशिष्ट प्रबंधन प्रणालियों में नवाचार कचरा पर हमारी निर्भरता को काफी कम कर सकते हैं। जूट, कपड़ा, बांस और अन्य बायोडिग्रेडेबल सामग्रियों जैसे पर्यावरण-अनुकूल विकल्पों का विकास और प्रचार इस संक्रमण को और सुविधाजनक बना सकता है।

निष्कर्ष कचरा मुक्त भारत सिर्फ एक सपना नहीं है, बल्कि एक व्यवहार्य वास्तविकता है जिसके लिए सामूहिक प्रयास, प्रभावी नीतियों, तकनीकी नवाचारों और जागरूक जीवनशैली में बदलाव की आवश्यकता है। इस लक्ष्य की ओर यात्रा न केवल हमारे पर्यावरण और स्वास्थ्य की रक्षा करेगी बल्कि एक टिकाऊ और लचीले भविष्य का मार्ग भी प्रशस्त करेगी। जिम्मेदार नागरिकों के रूप में, हम भारत को दुनिया के लिए स्थिरता का प्रतीक बन सकते है सरकार की इस पहल में अपना योगदान दे सकते हैं।

राजेश सैनी

उप मुख्य वित्त एवं लेखा अधिकारी

विकास का पर्यावरण पर प्रभाव

विकास एक सतत और निरंतर प्रक्रिया है। एक राष्ट्र को विकसित तभी माना जाता है जब वह अपने निवासियों के लिए पर्याप्त रोजगार का अवसर प्रदान करता है जिससे उन्हें सामान्य से बेहतर जीवन मिलता है। राष्ट्र के विकास से आय की असमानता को कम करने में मदद मिलती है। हालाँकि, हर विकास के कुछ सकारात्मक और नकारात्मक परिणाम होते हैं। किसी भी प्रकार का विकास प्रकृति को सदैव प्रभावित किया है । हम यह भूल गए हैं कि मनुषय के लिए विकास के साथ–साथ पर्यावरण भी समान रूप से महत्वपूर्ण है। पर्यावरण का सीधा संबंध मानव जीवन तथा मानव जीवन का सीधा संबंध पर्यावरण से है। दोनों ही एक-दूसरे के पर्याय हैं। मनुष्य और प्रकृति का रिश्ता सृष्टि के आरंभ से ही सह-अस्तित्व का रहा है लेकिन सभ्यता के विकास के साथ–साथ यह रिश्ता कमजोर होता गया है। विकास की होड़ ने पर्यावरण के संकट को जन्म दिया। आधुनिक सभ्यता में जो विकास का खाका बना उसी का परिणाम पर्यावरणीय संकट है।

विश्व स्तर पर विकास के कई सकारात्मक प्रभाव पड़े हैं। शहरीकरण और औद्योगीकरण की होड में वर्तमान में पर्यावरणीय गिरावट वैश्विक स्तर पर है। वैश्विक विकास के चार सबसे महत्वपूर्ण पर्यावरणीय प्रभाव हैं वनों की कटाई, प्रदूषण, मरुस्थलीकरण और प्रजातियों का विलुप्त होना।80 के दशक में पश्चिमी देशों में व्यक्ति पहले या प्रकृति पहले (man first or nature) की बहस भी चली। इसकी गूंज पूरे विश्व में सुनाई दी। इसके बाद भी पर्यावरण को दृष्टि में रखकर हमारी नीतियां नहीं बनी। नीति निर्माताओं के लिए पर्यावरण हमेशा परदे के पीछे का सवाल बना रहा। और पूंजी आधारित और संचालित विकास मॉडल में पर्यावरण तुच्छ बन गया।

सतत विकास का उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना भी है, ताकि वर्तमान पीढ़ी द्वारा उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उपयोग किए जाने के बाद भी, आने वाली पीढ़ी के लिए काफी कुछ बचा रहे। विकास को बनाए रखने के लिए, पर्यावरण को संरक्षित करने की आवश्यकता है। पर्यावरण एक राष्ट्र के आर्थिक विकास में एक

महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक राष्ट्र के विकास का एक बड़ा हिस्सा विभिन्न क्षेत्रों में उत्पादन से संबंधित है। पर्यावरण से पानी, जीवाश्म ईंधन, खनिज, मिट्टी आदि जैसे प्राकृतिक संसाधन विभिन्न क्षेत्रों में उत्पादन के लिए आवश्यक है। पर्यावरण में होने वाली समस्त घटनाएं किसी न किसी रूप में हमें सदैव प्रभावित करती रही हैं। यदि पर्यावरण पर विचार किए बिना विकास किया जाता है, तो इसका पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। यह, बदले में, मानव जीवन पर हानिकारक प्रभाव डालेगा। वैज्ञानिकों ने यह साबित कर दिया है कि पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है और यदि आवश्यक सावधानी नहीं बरती जा रही है, तो स्थिति और खराब होगी, जो पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य पर और नकारात्मक प्रभाव डालेगी।

प्राकृतिक संसाधनों की कमी एक और बड़ी चिंता है। पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनों की खपत तेजी से हो रही है। प्राकृतिक संसाधनों की कमी के साथ, बहुत जल्द पृथ्वी की बड़े पैमाने पर आबादी न केवल भोजन की कमी का सामना करेगी, बल्कि किसी भी विकास प्रक्रिया को पूरा करने के लिए संसाधनों की कमी का सामना करेगी। विश्व में प्लास्टिक एवं पॉलिथीन के आने से ही पर्यावरण संकट में था, अब साइबर क्रांति के कारण 'ई-वेस्ट' यानी इलेक्ट्रॉनिक कचरा नई समस्याओं के रूप में सामने आ रहा है। 'ई वेस्ट' से फास्फोरस, कैडमियम व मरकरी जैसी खतरनाक धातुओं को असावधानीपूर्वक निकालने से न्यूरो (मनोरोग) एवं कैंसर के रोगियों की संख्या में तीव्रतर वृद्धि हो रही है।

विकास दर जितनी अधिक होगी, उत्पादन उतना ही अधिक विषाक्त होगा। इस दृष्टिकोण के अनुसार, आने वाली पीढ़ियों के लिए समस्याओं का ढेर लग जाएगा जो उनसे निपटने में सक्षम नहीं होंगी। सतत विकास से गुजरने के लिए, पर्यावरण की सुरक्षा के लिए आवश्यक सावधानी बरतनी चाहिए। यह बदले में, वर्तमान आबादी के साथ-साथ आने वाली पीढ़ियों को भी लाभान्वित करेगा, जो स्थायी विकास का अंतिम लक्ष्य है। विकास के लाभों का पूरी तरह से आनंद लेने के लिए, पर्यावरण का संरक्षण आवश्यक है। यद्यपि इस तथ्य को विकास को प्राथमिकता देने में उपेक्षित किया गया है, लेकिन हाल के दिनों में लोगों के बीच जागरूकता में वृद्धि हुई है। पर्यावरण को पर्याप्त महत्व देकर, हम सभी लंबे समय तक विकास के लाभों का आनंद ले पाएंगे।

निष्कर्षतः आज ऐसे विकास की आवश्यकता है जो पर्यावरण हितैषी होने के साथ - साथ प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में मददगार हो , क्योंकि तभी हम सतत् विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल होंगे।

संजय कश्यप

प्रबंधक (कार्मिक एवं प्रशासन)

प्रभारी उप मुख्य वित्त एवं लेखा अधिकारी

आशाएँ कैसे पूरी हो?

हमारी इतनी आशाएँ होती हैं जिन्हें हम गिनते-गिनते थक जायेंगे तब भी गिन नहीं पायेंगे। सभी मनुष्यों की प्रवृत्ति रही है कि अपने जीवन से कुछ न कुछ आशा अवश्य रखते हैं परन्तु क्या सोचने से कभी किसी की आशाएँ पूरी हुई हैं। भला कभी ऐसा हुआ है कि आपने पेड़ नहीं लगाया और आपको फल की प्राप्ति हो जाए? नहीं कदापि नहीं, आशाओं का सम्बन्ध हमारे सपनों से होता है। सपना जिन्दगी में कुछ करने का, बनने का, इस दुनिया में छा जाने का यही तो होता है। आशाओं और सपनों को पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत व दिन-रात एक करने की जरूरत होती है। इसके अलावा तपस्या की जरूरत भी होती है। तपस्या का मतलब मैं किसी सन्यासी जैसी तपस्या की बात नहीं कर रहा हूँ ना ही कह रहा हूँ कि आप किसी पर्वत पर जाकर आप दिन-रात तपस्या करें। मैं बात कर रहा हूँ साहस, संकल्प और दृढ़ निश्चय रूपी तपस्या की, तभी जाकर अपनी आशाओं और अपने सपनों को पूरा किया जा सकता है। लेकिन कभी-कभी ऐसा भी होता है कि हमारी मेहनत के हिसाब से व हमारी मेहनत के अनुसार हमें फल की प्राप्ति नहीं होती या फिर हमारे हाथ असफलता लगती है। तब हम बहुत निराश हो जाते हैं। हम नकारात्मक बातें सोचने लगते हैं। जैसे कि शायद मेरी किस्मत खराब है या ईश्वर की यही इच्छा थी, जो होगा किस्मत में देखा जाएगा।

यदि एक छोटा सा बच्चा जो चल ही नहीं पाता और उसकी माँ सोचे कि मेरा बेटा अपने पैरों से चले, उसकी माँ यह सोचकर उसे खड़ा कर देती है और कहती है बेटा चलो अगर वह चलते-चलते बीच में कुछ दूरी को तय करने के बाद गिर जाता है तो क्या उसकी माँ ऐसा सोचेगी कि अब मैं अपने बेटे को चलने के लिए नहीं कहूँगी? नहीं कभी नहीं।

इसलिए हमें हमेशा आशावादी होना चाहिए। यदि हम आशावादी होंगे तो दुनिया की कोई ताकत नहीं और कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जो हमारी आशाओं और सपनों को पूरा न होने दे, इसलिए जिन्दगी जीने का नाम है। सपने देखना और उनको पूरा करने की आशा रखना एक प्रकार से मनुष्य की प्रवृत्ति है व प्रवृत्ति रहती है।

इसलिए आशावादी होना जीतने का आधार है।

मेहरबान सिंह चौहान

वरिष्ठ लेखा अधिकारी

आशा

आशा उत्साह की जननी है

आशा में तेज है

बल है जीवन है

आशा संसार की संचालन शक्ति है

प्रेमचंद

हिन्दी के कार्यान्वयन में वाइस टाइपिंग का महत्व

राजभाषा का अर्थ है संविधान द्वारा स्वीकृत सरकारी कामकाज की भाषा। किसी देश का सरकारी कामकाज जिस भाषा में करने का कोई निर्देश संविधान के प्रावधानों द्वारा दिया जाता है, वह उस देश की राजभाषा कही जाती है। हिंदी हमारी राजभाषा है इसलिए सरकारी कार्यालयों में प्रयास रहता है कि शत–प्रतिशत अधिक से अधिक कार्य हिंदी में संपन्न हो लेकिन हिन्दी के कार्यान्वयन में सबसे बडी दिक्कत हिन्दी टाइपिंग की आती है। हर किसी को टाइपिंग नहीं आती है। टाइपिंग का नाम आते ही, हिंदी और अंग्रेजी के अक्षर छपे की–बोर्ड की छवि घूमने लगती है। कंप्यूटर, मोबाइल, पर की–बोर्ड का उपयोग हम सब करते हैं। दुनिया तेजी से बदल रही है और दुनिया के साथ ही टेक्नोलॉजी भी तेजी से बदल रही है। टेक्नोलॉजी के बदलते दौर में हमारा टाइपिंग करने का तरीका भी बदला है। पहले हम टाइपराइटर से टाइपिंग किया करते थे इसके बाद कम्प्युटर पर की–बोर्ड से टाइपिंग करने लगे। इसके बाद स्मार्टफोन आए और हम स्क्रीन पर टच करके टाइपिंग करने लगे। लेकिन अब दौर और भी ज्यादा बदल चुका। अगर आप टाइपिंग नहीं जानते है तो अब सिर्फ बोलकर किसी भी चीज को टाइप कर सकते हैं ।

वॉइस टाइपिंग उस टाइपिंग को कहा जाता है जिसे आप बोलकर करते हैं। वॉइस टाइपिंग एक वरदान की तरह है खासतौर से उन लोगों के लिए जो टाइपिंग करना नहीं जानते हैं। वो सिर्फ बोलकर अच्छी टाइपिंग कर सकते हैं । इसके अलावा वॉइस टाइपिंग करने में आपको ज्यादा समय भी नहीं लगता है। की–बोर्ड के मुक़ाबले वॉइस टाइपिंग काफी तेजी से होती है और इसमें गलतियाँ भी काफी कम होती है। ऑडियो टाइपिंग एक मशीन लर्निंग आधारित नई तकनीक है। इसकी मदद से हम मोबाइल या कंप्यूटर पर टचपैड या की–बोर्ड पर बिना उँगलियाँ लगाए, सिर्फ बोल कर टाइप कर सकते हैं। यानी जैसे-जैसे आप बोलते जाएंगे, स्क्रीन पर वह शब्द खुद-ब-खुद टाइप होता चला जाएगा। इसकी मदद से आप कोई भी शब्द टाइप या सर्च कर सकते हैं।

अगर आप कम्प्यूटर पर काम करते हैं और आपको टाइपिंग करना पड़ता है तो आप अपने कम्प्यूटर या लैपटाप पर आसानी से बोलकर टाइपिंग कर सकते हैं। कम्प्यूटर या लैपटाप में वॉइस टाइपिंग करने के लिए आपके कम्प्यूटर या लैपटाप में माइक का होना बेहद जरूरी है। अगर आपके पास माइक नहीं है तो आप वॉइस टाइपिंग नहीं कर पाएंगे। कम्प्यूटर पर वॉइस टाइपिंग करने के लिए नीचे दिया गया तरीका अपना सकते हैं।

कम्प्यूटर पर वॉइस टाइपिंग के लिए क्रोम एक्सटेंशन एप्लिकेशन का प्रयोग करते हुए निम्न चरणों का पालन करें।

- ❖ पहले क्रोम वेब स्टोर से वॉयस इन वॉयस एक्सटेंशन अपने क्रोम ब्राउज़र में जोड़ना होगा।

❖ इसके बाद माइक्रोफोन को अनुमति दें, ताकि कंप्यूटर पर आवाज़ डिडेक्ट हो सके और हम टाइप कर सकें।

❖ अब जिस भाषा में टाइप करना चाहते हैं, उसे चुनें।

❖ अब आप ऑडियो टाइपिंग के लिए तैयार हैं। जहां पर भी वॉइस टाइपिंग करना है, उसे एडिटर करने के बाद माउस का राइट बटन क्लिक करके रिकॉर्डिंग सक्रिय कर और टाइप करना शुरू करें या गुगल ट्रांसलेट पर जाकर भाषाचुने और माइक सक्रिय कर बोलना आरंभ करें जो भाषा आपके द्वारा चुनी गई है अर्थात जिस भाषा में आप बोलेंगे वो टाइप होता चला जाएगा।

इस तरह आप अपने कम्प्यूटर या लैपटाप पर सिर्फ बोलकर टाइपिंग कर सकते हैं। टाइपिंग करने के दौरान एक बात का ध्यान रखें कि आप जो बोल रहे हैं उसका उच्चारण सही और शुद्ध हो। आप जितना अच्छे से बोलेंगे वॉइस टाइपिंग में गलतियाँ होने की संभावना उतनी ही कम होगी। इसकी खास बात है, इसकी मदद से किसी भी भाषा में टाइप कर सकते है। इसके लिए नीचे दिए गए ग्लोब के निशान पर क्लिक करना होगा। इसके बाद भाषा चयन कर वॉइस टाइपिंग कर सकते है। इसलिए अब हमें हिन्दी में काम करने में कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए। हमारा प्रयास यहीं होना चाहिए कि हम हिन्दी में अधिक से अधिक काम हिन्दी में ही करें।

ज्योति शर्मा

हिन्दी अधिकारी

आत्म संतुष्टि

आत्म संतुष्टि से आशय है कि सर्वप्रथम अपनी इच्छाओं को कम करना या यू कहे कि नियंत्रण करना। फलस्वरूप जो कुछ भी आपके पास उपलब्ध है उसका सदुपयोग करते हुए जीवन को व्यतीत करना। आत्म संतुष्टि का एहसास निर्मल हृदय एवं प्रसन्नता की ओर अग्रसर करता है। यह सच है कि आत्मिक संतुष्टि में ही वास्तविक आनन्द का वास होता है। फल की इच्छा किए बगेर कर्म करना आत्म संतुष्टि के लिए सबसे अच्छा मार्ग हो सकता है। गीता का संदेश भी यही है कि कर्म करते हुए फल की इच्छा नहीं होनी चाहिए और स्वयं को ईश्वर के समीप महसूस करना चाहिए।

इस संसारिक जीवन में इच्छाओं, उत्तरदायित्वों व अपेक्षाओं का होना स्वाभाविक है। किन्तु प्रयास करके यदि संतुष्टि के बीज को बोया जाए तो अवश्य ही प्रसन्नता एवं सुख का वृक्ष जीवन में आकार ले सकता है। यदि आप संतुष्ट हैं तो जीवन बहुत ही सरल है और नहीं तो आप हमेशा मृग–तृष्णा की तरह भागते ही रहोगे लेकिन आपको वह सुगंध कभी नहीं मिल पाएगी। आप अपना पूरा जीवन इसी परेशानी में काट दोगे। इसलिए जीवन में संतुष्टि होना बहुत जरूरी है ताकि जीवन सुखमय हो सके। धन को उन्नति का पथ प्रशस्त करने वाला माना गया है लेकिन धन से मनुष्य कभी तृप्त नहीं हुआ और अतृप्त इंद्रियों से हृदय अशांत रहता है, अशांत हृदय में सुख कभी नहीं ठहरता।

संतुष्टि के अभाव में जीवन नरक बन जाता है क्योंकि सुख की जननी संतोष है। बहुमूल्य धन-संपत्ति का स्वामी कोठी, कार अनगिनत पैसे का मालिक, लखपति से करोड़पति, करोड़पति से अरबपति बनने के लिए बेचैन रहता है। दूसरी ओर संतुष्ट व्यक्ति के लिए ऊंचे पद, रुपया, पैसा, हीरा, मोती आदि नैसर्गिक हैं। धन की चाह में प्राणी कभी तृप्त नहीं होता। धन की चरम शक्ति साम्राज्य है पर संतोष साम्राज्य से भी बढ़कर है। शेक्सपियर ने कहा है – ***मेरा मुकुट मेरे हृदय में है मेरा मुकुट ना हीरो से जड़ित है ना रत्नों से मेरे मुकुट का नाम संतोष है संतोष ही हमारी सर्वोपरि संपत्ति है (अनुवादित)।*** संतोष धारण कर लेने पर सारा संसार आनंदरूप ही दिखाई पड़ता है संतोष रूपी धन जिसके पास है उसकी आंखों में चमक होती है स्वास्थ्य उसका ठीक रहता है। एक यूनानी दार्शनिक ने कहा है– "यथा देश, यथा काल, यथा भाग्य जो मिल जाए उसी से संतोष करना चाहिए। मैं संतुष्ट हूं क्योंकि मैं जानता हूं कि परमात्मा द्वारा मेरे लिए किया गया चयन, मेरे चयन से अधिक श्रेष्ठ है" परमात्मा का हर फैसला हमें स्वीकार्य होना ही चाहिए। जीवन की चाह क्या है जीवन को सुखपूर्वक भोगने की लालसा में ही सुख का निवास है। तृप्त मन से आदमी सुखी महसूस करता है यही कारण है कि धनवान अंतः करण से दुखी और निर्धन धनहीन होते हुए भी सुखी हैं।

कबीर दास जी का यह दोहा आत्म संतुष्टि का स्टीक उदाहरण है –

साईं इतना दीजिये, जामे कुटुंब समाये।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधू न भूखा जाए।

हे प्रभु, मुझे ज्यादा धन और संपत्ति नहीं चाहिए, मुझे केवल इतना चाहिए जिसमें मेरा परिवार अच्छे से खा सके। मैं भी भूखा ना रहूं और मेरे घर से कोई भूखा ना जाये। मेरा मन संतुष्ट रहे। ज्यादा का लालच करने से हम सदा बैचेन रहेंगे। अर्थात चिंता को छोड़ कर, कामना रहित जीवन ही उचित है। इसका अर्थ यह नहीं कि आप कामना ना रखे। कामना केवल उतनी ही करें, जिससे हमारा मन, मस्तिष्क शांत और तन स्वस्थ रहे। मेरे विचार में यही जीवन का सार है।

विकास किशोर सक्सेना
निजी सचिव

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा निर्धारित राजभाषा हिंदी के सफल कार्यान्वयन के लिए 12 "प्र" की रूपरेखा

❖	प्रेरणा	Inspiration and Motivation
❖	प्रोत्साहन	Encouragement
❖	प्रेम	Love and affection
❖	प्राइज़ अर्थात पुरस्कार	Rewards
❖	प्रशिक्षण	Training
❖	प्रयोग	Usage
❖	प्रचार	Advocacy
❖	प्रसार	Transmission
❖	प्रबंधन	Administration and management
❖	प्रमोशन अर्थात पदोन्नति	Promotion
❖	प्रतिबद्धता	Commitment
❖	प्रयास	Efforts

चमत्कारी पौधाः तुलसी

तुलसी का पौधा अपने धार्मिक और वैज्ञानिक कारणों से हिंदू धर्म में बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाता है। तुलसी के पौधे का महत्व पद्मपुराण, ब्रह्मवैवर्त, स्कंद और भविष्य पुराण के साथ गरुड़ पुराण में भी बताया गया है । ऐसा माना जाता है कि देव और दानवों द्वारा किए गए समुद्र मंथन के समय जो अमृत धरती पर छलका, उसी से तुलसी की उत्पत्ति हुई। ब्रह्मदेव ने उसे भगवान विष्णु को सौंपा। इन पौराणिक ग्रंथों के अलावा आयुर्वेद और विज्ञान ने भी इस पौधे को पर्यावरण एवं स्वस्थ्य के लिए महत्वपूर्ण माना है। तुलसी का पौधा ज्यादातर सभी के घरों में सदियों से लगता आ रहा है क्योंकि सनातन घर्म में इसका बहुत बड़ा महत्व बताया गया है। हमारे शास्त्रों और धार्मिकता के हिसाब से तुलसी पूजन रोज़ करना चाहिए क्योंकि तुलसी में माता लक्ष्मी का वास होता है।

धार्मिक महत्व – हमारे हिंदू धर्म में तुलसी को लेकर बहुत सी मान्यताएं है। पद्मपुराण, ब्रह्मवैवर्त, स्कंद पुराण, भविष्य पुराण और गरुड़ पुराण में तुलसी के पौधे को बहुत फायदेमंद बताया गया है। कहा जाता है भगवान श्री कृष्ण की पूजा बिना तुलसी के अधूरी मानी जाती है। तुलसी का प्रतिदिन दर्शन करना पापनाशक समझा जाता है तथा पूजन करना मोक्षदायक । तुलसी को घर के ऑगन में लगाने से पाप,कष्ट नष्ट हो जाते है और घर में सुख समृद्धि आती है। इसके अलावा मृत्यु के समय तुलसी और गंगा जल को व्यक्ति के मुँह में डाला जाता है ताकि उसकी आत्म को शांति और स्वर्ग की प्राप्ति हो।

औषधीय महत्व– वैज्ञानिक तौर पर तुलसी का पौधा हमारे वातावरण को शुद्ध करता है। तुलसी विटामिन और खनिज का भंडार है। इसमें मुख्य रुप से विटामिन सी, कैल्शियम, जिंक, आयरन और क्लोरोफिल पाया जाता है। इसके अलावा तुलसी में सिट्रिक, टारटरिक एवं मैलिक एसिड पाया जाता है जो विभिन्न रोगों के रोकथाम के लिए भी उपयोगी है। तुलसी में एंटी-ऑक्सीडेंट, एंटी-बैक्टीरियल, एंटी-वायरल, एंटी-फ्लू, एंटी-बायोटिक, एंटी-इफ्लेमेन्ट्री व एंटी–डिजीज गुण होते हैं, जो शरीर में संक्रमण से लड़ने के लिए लाभदायक होते है। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि नियमित रूप से तुलसी का सेवन किया जाए तो इससे शरीर में ऊर्जा का प्रवाह अच्छा बना रहता है, मौसमी बीमारियां जल्दी नहीं लगती। इसका सेवन करते समय इसके पत्तों को चबाएं न क्योंकि इसके पत्तों में पारा होता जो कि दांतों को खराब कर सकता है इसकी पत्तियों को चाय में डालकर या काढ़ा बनाकर पी सकते है। तुलसी का पौधा चौबीस घंटे ऑक्सीजन प्रदान करता है। तुलसी के पौधे के आसपास ऑक्सीजन की प्रचुरता बनी रहती है। जिससे शरीर में आक्सीजन की मात्रा बढ़ती है।

वास्तु शास्त्र के अनुसार तुलसी का पौधा सही दिशा में और उचित स्थान पर रखा हो तो घर में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह बढ़ता है और आर्थिक स्थिति मजबूत होती है घर में सुख समृद्धि का वास होता है। वास्तु शास्त्र में बताया गया है कि इसे कभी दक्षिण भाग में नहीं लगाना चाहिए इससे आपके जीवन में दोष उत्पन्न होता है। इसे उत्तर-पूर्व कोने में रखना शुभ होता है। तुलसी के पौधे की अहमियत हजारों साल पहले ही भारतीय विद्वानों ने पहचान ली थी, इसीलिए तुलसी हमारे जीवन का अहम हिस्सा है। अपने गुणों के कारण यह पौधा आज भी हर घर की शोभा है।

सुपर फूडः मिलेट्स

मिलेट्स यानि मोटे अनाज स्वास्थ्य और पोषण की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण हैं इसलिए आज मोटे अनाजों को सुपरफूड ,पोषक अनाज जिसे श्री अन्न या मिलेट्स भी कहा जाता है, यह लंबे समय से एशियाई संस्कृतियों का हिस्सा रहे हैं। हरित क्रांति के आगमन तक मध्य और दक्षिणी भारत की अधिकांश आबादी द्वारा प्रतिदिन मोटे अनाज का ही सेवन किया जाता था तब हमारे खाने की परंपरा बिल्कुल अलग थी। भारतीय हिंदू परंपरा में यजुर्वेद में मोटे अनाज का जिक्र मिलता है। मोटे अनाज अर्थात मिलेट्स की श्रेणी में ज्वार, बाजरा, रागी, सावां, कंगनी, चीना, कोदो, कुटकी और कुट्टू आते हैं। भारत में 60 के दशक के पहले तक मोटे अनाज की खेती की परंपरा थी उसके बाद आई हरित क्रांति के दौरान हमने गेहूं और चावल को अपनी थाली में सजा लिया और मोटे अनाज को खुद से दूर करते चले गए।

आज मोटे अनाज को सुपर फूड के तौर पर पहचाना जा रहा है क्योंकि वह धरती के लिए, किसानों के लिए और हम सबकी सेहत के लिए अच्छे हैं। मोटे अनाजों को अधिक पानी-सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। यह अधिक तापमान में भी आसानी से पैदा किये जा सकते हैं। इसकी फसल पर कीट–पंतगें आक्रमण नहीं करते हैं जिससे इस पर यूरिया और दूसरे रसायनों की जरूरत भी नहीं पड़ती। यह किसी भी प्रकार की मिट्टी में भी उग जाते हैं और 10 से 12 साल तक रखने के बाद भी ये खाने लायक होते हैं इसलिए ये पर्यावरण और सेहत दोनों के लिए बेहतर है।

वर्ष 2018 में खाद्य और कृषि संगठन के समक्ष वर्ष 2023 को अंतर्राष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष के रूप में मनाने प्रस्ताव रखा जिसे **मार्च 2021 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा भारत की ओर से पेश एक प्रस्ताव को सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया है, जिसके तहत वर्ष 2023 को 'अंतरराष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष' (International Year of Millets) घोषित किया गया है। इस प्रस्ताव का 70 से अधिक देशों ने समर्थन किया।** उच्च पोषण स्तर के साथ–साथ मिलेट्स धरती के बढ़ते तापमान के होने वाली पानी की कमी के लिए उचित फसल है और भविष्य में यह जीवन रक्षक सिद्ध होगा। इसी जन जागरूकता को बढ़ाने के लिए सरकार विश्व में मोटे अनाज को बढ़ावा देना चाहती है। अंतर्राष्ट्रीय मिलेट्स ईयर के चलते पूरे विश्व में मोटे अनाजों के प्रति किसानों और आम नागरिकों में जागरूकता पैदा की जा रही है। प्राप्त आंकडों के अनुसार भारत के लगभग 21 राज्यों में मोटे अनाजों की खेती की जाती है। जबकि विश्व के 131 देशों में किसी न किसी रूप में मोटे अनाजों की खेती होती है। संपूर्ण एशिया एवं अफ्रीका के देशों में 59 करोड़ लोग आज भी परंपरागत रूप से मोटे अनाज को अपने भोजन में शामिल करते हैं।

भारत में देश के पांच प्रमुख राज्यों में क्रमशः राजस्थान में बाजरा-ज्वार, कर्नाटक में ज्वार-रागी, महाराष्ट्र में रागी-ज्वार और उत्तर प्रदेश व हरियाणा में बाजरा की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है। बाजरा जैसे मोटे अनाज को भविष्य का अनाज तक कहकर संबोधित किया जा रहा है। इससे बखूबी यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि मोटे अनाज

स्वास्थ्य और पोषण की दृष्टि से आने वाले भविष्य में कितना महत्वपूर्ण योगदान देने की क्षमता रखते हैं। भारत श्री अन्न के सबसे बड़े उत्पादक और दूसरे सबसे बड़े निर्यातक हैं। छोटे किसानों ने नागरिकों की सेहत को मजबूत करने के लिए श्री अन्न उगाया है और बड़ी भूमिका निभाई है। मिलेट्स में अनाज गैर एसिड बनाने वाले गैर ग्लूटीनस अत्यधिक पौष्टिक और आसानी से पचने वाले खाद्य पदार्थ हैं। मिलेट्स ऐसा मोटा अनाज है जो पौष्टिक तत्वों से भरपूर होते हैं इनमें ढेर सारा डायटरी फाइबर मौजूद है। यह खाने से आसानी से पच जाता है मिलेट्स के सेवन से डायबिटीज, हाई बीपी और कई ढेर सारी बीमारियों को कंट्रोल करने में आसानी होती है। मिलेट्स में फाइबर के साथ साथ प्रोटीन, फोलेट, अमिनो एसिड और ढेर सारा आयरन, मिनरल्स जैसे कैल्शियम,जिंक, फास्फोरस, मैग्नीशियम, पोटैशियम,और विटामिन-बी-6 प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। मिलेट्स ग्लूटन फ्री, हाई फाइबर फूड और अत्यधिक पौष्टिक होने

के कारण यह हमारे इम्यून सिस्टम को मजबूत करता है। हमारे पुरखों की लम्बी उम्र और सेहत का असली राज ही मोटे अनाज हुआ करते थे, जो उन्हें सर्दी, गर्मी और बरसात से बेपरवाह रखते थे। मोटा अनाज अधिक रेशेदार होने की वजह से आंतों में रुकता नहीं है व कब्ज से बचाता आज यह अनाज वैज्ञानिकों द्वारा प्रमाणित किए जाने के बाद अब हर वर्ग शौक से खरीदता है। तो आइए हम सब भी इसे अपने भोजन की थाली में शामिल करें और रोगमुक्त जीवन की ओर बढे।

ज्योति शर्मा
हिन्दी अधिकारी

एक रुपया

बहुत समय पहले की बात है, सुब्रोतो लगभग 20 साल का एक लड़का था और कलकत्ता की एक कॉलोनी में रहता था। उसके पिताजी एक भट्टी चलाते थे जिसमें वे दूध को पका-पका कर खोया बनाने का काम करते थे। सुब्रोतो वैसे तो एक अच्छा लड़का था लेकिन उमसे फिजूलखर्ची की एक बुरी आदत थी।वो अकसर पिताजी से पैसा माँगा करता और उसे खाने-पीने या सिनेमा देखने में खर्च कर देता। एक दिन पिताजी ने सुब्रोतो को बुलाया और बोले, "देखो बेटा, अब तुम बड़े हो गए हो और तुम्हें अपनी जिम्मेदारियां समझनी चाहिये। जो आये दिन तुम मुझसे पैसे मांगते रहते हो और उसे इधर-उधर उड़ाते हो ये अच्छी बात नहीं है।"

"क्या पिताजी! कौन सा मैं आपसे हज़ार रुपये ले लेता हूँ... चंद पैसों के लिए आप मुझे इतना बड़ा लेक्चर दे रहे हैं। इतने से पैसे तो मैं जब चाहूँ आपको लौटा सकता हूँ।", सुब्रोतो नाराज होते हुए बोला।

सुब्रोतो की बात सुनकर पिताजी क्रोधित हो गए, पर वो समझ चुके थे कि डांटने-फटकारने से कोई बात नहीं बनेगी। इसलिए उन्होंने कहा, " ये तो बहुत अच्छी बात है...ऐसा करो कि तुम मुझे ज्यादा नहीं बस एक रुपये रोज लाकर दे दिया करो।"

सुब्रोतो मुसकुराया और खुद को जीता हुआ महसूस कर वहां से चला गया। अगले दिन सुब्रोतो जब शाम को पिताजी के पास पहुंचा तो वे उसे देखते ही बोले, " बेटा, लाओ मेरे 1 रुपये।"

उनकी बात सुनकर सुब्रोतो जरा घबराया और जल्दी से अपनी दादी माँ से एक रुपये लेकर लौटा। "लीजिये पिताजी ले आया मैं आपके एक रुपये!", और ऐसा कहते हुए उसने सिक्का पिताजी के हाथ में थमा दिया।

उसे लेते ही पिताजी ने सिक्का भट्टी में फेंक दिया।"ये क्या, आपने ऐसा क्यों किया?", सुब्रोतो ने हैरानी से पूछा।पिताजी बोले- सुब्रोतो ने भी ज्यादा बहस नहीं की और वहां से चुपचाप चला गया।

अगले दिन जब पिताजी ने उससे 1 रुपया माँगा तो उसने अपनी माँ से पैसा मांग कर दे दिया...कई दिनों तक यही सिलसिला चलता रहा वो रोज किसी दोस्त-यार या सम्बन्धी से पैसे लेकर पिताजी को देता और वो उसे भट्टी में फेंक देते।

फिर एक दिन ऐसा आया, जब हर कोई उसे पैसे देने से मना करने लगा। सुब्रोतो को चिंता होने लगी कि अब वो पिताजी को एक रुपये कहाँ से लाकर देगा।

शाम भी होने वाली थी, उसे कुछ समझ नही आ रहा था कि वो करे क्या! एक रुपया भी ना दे पाने की शर्मिंदगी वो उठाना नहीं चाहता था। तभी उसे एक अधेड़ उम्र का मजदूर दिखा जो किसी मुसाफिर को हाथ से खींचे जाने वाले रिक्शे से लेकर कहीं जा रहा था।

"सुनो भैया, क्या तुम थोड़ी देर मुझे ये रिक्शा खींचने दोगे? उसके बदले में मैं तुमसे बस एक रुपये लूँगा", सुब्रोतो ने रिक्शे वाले से कहा। रिक्शा वाला बहुत थक चुका था, वह तुरन्त तैयार हो गया।

सुब्रोतो रिक्शा खींचने लगा! ये काम उसने जितना सोचा था उससे कहीं कठिन था... थोड़ी दूर जाने में ही उसकी हथेलियों में छाले पड़ गए, पैर भी दुखने लगे! खैर किसी तरह से उसने अपना काम पूरा किया और बदले में ज़िन्दगी में पहली बार खुद से 1 रुपया कमाया।

आज बड़े गर्व के साथ वो पिताजी के पास पहुंचा और उनकी हथेली में 1 रुपये थमा दिए।रोज की तरह पिताजी ने रूपये लेते ही उसे भट्टी में फेंकने के लिए हाथ बढाया।

"रुकिए पिताजी!", सुब्रोतो पिताजी का हाथ थामते हुए बोला, "आप इसे नहीं फेंक सकते! ये मेरे मेहनत की कमाई है।" और सुब्रोतो ने पूरा वाकया कह सुनाया।

पिताजी आगे बढे और अपने बेटे को गले से लगा लिया। "देखो बेटा! इतने दिनों से मैं सिक्के आग की भट्टी में फेंक रहा था लकिन तुमने मुझे एक बार भी नहीं रोका पर आज जब तुमने अपनी मेहनत की कमाई को आग में जाते देखा तो एकदम से घबरा गए। ठीक इसी तरह जब तुम मेरी मेहनत की कमाई को बेकार की चीजों में उड़ाते हो तो मुझे भी इतना ही दर्द होता है, मैं भी घबरा

जाता हूँ...इसलिए पैसे की कीमत को समझो चाहे वो तुम्हारे हों या किसी और के...कभी भी उसे फिजूलखर्ची में बर्वाद मत करो!"

सुब्रोतो पिताजी की बात समझ चुका था, उसने फौरन उनके चरण स्पर्श किये और अपने व्यवहार के लिए क्षमा मांगी। आज वो एक रुपये की कीमत समझ चुका था और उसने मन ही मन संकल्प लिया कि अब वो कभी भी पैसों की बर्बादी नहीं करेगा।

ईमेल आईडी

एक बार एक व्यक्ति एक company में जॉब ढूंढने के लिए गया, इंटरव्यू रूम से बाहर बैठा हुआ व्यक्ति सोच रहा था कि अगर आज मुझे जॉब नहीं मिली तो मैं अपने परिवार वालों को आज रात का खाना तक नहीं खिला पाऊंगा, उसकी बारी आई...

उसके सामने बैठे हुए व्यक्ति के कपड़े देखकर ही उसके पैर थरथर कांपने लगे, लेकिन वहां बैठा हुआ मैनेजर इतना भी सख्त नही था,

मैनेजर : आपकी परेशानियां और आपके हालात को देखते हुए मैंने यह फैसला किया है कि मैं यह जॉब आपको दूंगा ,

व्यक्ति : जी बहुत-बहुत शुक्रिया सर

मैनेजर : आप मुझे अपनी **ईमेल आईडी** बताइए।

व्यक्ति : **ईमेल** तो नही है

मैनेजर : सॉरी फिर हम आपको जॉब नहीं दे सकते,

यह सुनकर वो व्यक्ति हैरान हो गया और सोचने लगा कि ऐसा भी क्या है **ईमेल आईडी** में जो मुझे उसकी वजह से जॉब मिलते मिलते रह गई, उसके परिवार का दिमाग उसके ख्याल से निकल गया था मेरा मतलब उनके परिवार का ख्याल उनके दिमाग से निकल गया।

कुछ वक्त बाद उसके दिमाग में अपना परिवार आया, यह सोचकर वह रास्ते पर खड़ा एक व्यक्ति जो अंगूर बेच रहा था उसके पास गया और कहने लगा कि अगर मेरे लायक कुछ काम हो तो प्लीज मुझे दीजिए, उस अंगूर बेचने वाले ने उसे कुछ अंगूर दिए और कहा कि इसे बेचकर आओ,

कुछ वक्त बाद सब कुछ एकदम पलट गया था, उसने वह अंगूर बेचना शुरू कर दिया वह रोज अंगूर बेचता था और अपने परिवार को पालता था। धीरे धीरे उसकी इनकम बढ़ती गई फिर उसने अपने व्यापार में कुछ और फल को शामिल कर लिया,

वह अब पूरा दिन सिर्फ और सिर्फ काम पर ध्यान देता था और बहुत सारा परिश्रम और कठिनाइयों का सामना करने के बाद वह व्यक्ति एक बहुत बड़ा फल का व्यापारी बन चुका था,

बहुत पैसे कमाने के बाद वह व्यक्ति ने सोचा कि क्यों ना मैं अपने परिवार का इंश्योरेंस करूँ, यही सोच कर वह व्यक्ति एक इंश्योरेंस कंपनी के पास गया और वहां जाकर उसने सारी फॉर्मेलिटी पूरी की और अन्त में मैनेजर ने उसे पूछा...

मैनेजर : सर आपका इंश्योरेंस अकाउंट तो बन चुका है अब आप मुझे अपनी **ईमेल आईडी** बताइए ताकि मैं आपको हमारे कंपनी के कुछ इंपॉर्टेंट ईमेल भेज सकूं ,

व्यक्ति : जी मेरे पास **ईमेल आईडी** तो नहीं है साहेब।

मैनेजर : बिना **ईमेल आईडी** के आप इतने बड़े आदमी बन सकते हैं तो अगर आपके पास ईमेल आईडी होता तो आप आज कहां होते हैं,

व्यक्ति ने मुसकुराते हुए सोचा कि अगर उस दिन मेरे पास मेल आईडी होता तो मैं किसी कंपनी में 10000 सैलेरी पर नौकरी कर रहा होता जबकि आज मैं बहुत बड़ा फल व्यापारी हूं।

कर्मों का लेखा-जोखा

एक फौजी था उसके मां बाप नहीं थे शादी नहीं की बच्चे, भाई-बहन कोई भी नहीं था। वह अकेला ही था वह कमा-कमा कर पैसे जमा करता जा रहा था। कुछ दिन बाद एक सेठ जी जो फौज में माल सप्लाई करते थे। उन से उसका परिचय हो गया दोस्ती हो गई। सेठ जी ने कहा जो तुम्हारे पास पैसे है वो उतने का ही उतना है तुम मुझे दे दो मैं कारोबार में लगा दूंगा पैसे से पैसा बढ़ जाएगा। इसलिए तुम मुझे पैसे दे दो। फौजी ने सेठ जी को पैसे दे दिए सेठ जी कारोबार में पैसे लगा दिए। कारोबार उनका चमक गया। खूब कमाई होने लगी कारोबार बढ़ गया। थोड़े ही दिन में लड़ाई छिड़ गई। लड़ाई में फौजी घोड़ी चढ़कर लड़ने गया और लड़ाई में उसकी मृत्यु हो गई। अब सेठ जी को पता लगा फौजी मर गया तो सेठ जी बहुत खुश हुए कि उसका कोई उत्तराधिकारी तो है नहीं अब सारा पैसा उसका हो गया। कुछ दिनों के बाद सेठ जी के घर में लड़के का जन्म हुआ। अब सेठ जी और खुश कि भगवान को बड़ी दया है खूब पैसा भी हो गया कारोबार भी अच्छा हो गया बेटा भी हो गया। वो लड़का बहुत होशियार था खूब पढ़ाया लिखाया अब वह बड़ा हो गया अब इसकी शादी भी कर दी। बहु रानी भी घर पर आ गई अब ये कारोबार संभाल लेगा। लेकिन कुछ दिन के बाद उसके लड़के की तबीयत खराब होने लगी बहुत इलाज करवाया पर लड़के की मृत्यु हो गयी। उसे कोई असाध्य रोग था। अब सेठ जी ने ठानी बहुत रोने लगे और घर में बहु रानी और गांव भी रो रहा था तभी एक महात्मा जी आ गए उन्होंने पूछा भाई ये रोना धोना क्यों है। लोग कहने लगे सेठ जी का एक ही जवान बेटा था वो भी मर गया। इसलिए रो रहे हैं। महात्मा जी बोले सेठ जी रोना क्यों? सेठ जी महाराज एक ही जवान बेटा वह भी मर गया रोये नहीं तो क्या करें? महात्मा उस दिन तो आप बड़े खुश थे किस दिन सेठ जी पूछा महात्मा उसी दिन जिस दिन फौजी ने तुम्हें पैसा दिया सेठ हां कारोबार के लिए पैसा मिला तो खुश था। महात्मा जी और उस दिन खुशी का ठिकाना न था। सेठ जी किस दिन? महात्मा जिस दिन फौजी मरा। सोचा कि अब तो पैसा भी नहीं देना पड़ेगा। धन बहुत हो गया कारोबार चमक गया और अब पैसा वापिस भी नहीं पड़ेगा। सेठ जी हां महाराज खुश तो था, महात्मा जी और उस दिन तो खुशी का ठिकाना भी न था जिस दिन बेटा पैदा हुआ और खूब मिठाई बांटी। सब खुश होते तो मैं भी खुश हुआ। महात्मा उस दिन तो खुशी से आपके पैर जमीन पर नहीं पड़ रहे थे जिस दिन

बेटे की शादी करवाने जा रहे थे। सेठ जी महाराज बेटे की शादी करवाने जाते है तो हर आदमी खुश होता है तो मैं भी खुश हो रहा था। महात्मा तो जब इतनी बार खुश हो गए तो जरा सी बात के लिए क्यों रो रहे हो? सेठ जी महाराज ये क्या जरा सी बात है? मेरा जवान बेटा मर गया। महात्मा अरे सेठ जी वहीं फौजी पैसा लेने के लिए बेटा बनकर आ गया। पढ़ने लिखने, खाने पीने पहनने और शौक में श्रृंगार में जितना लगाना था लगाया। शादी ब्याह में सब लग गया और ब्याज दर ब्याज लगाकर डॉक्टर को दिलवा दिया और जब दो आने पैसे बचे वो भी वैध जी को दिलवा दिए और अपना हिसाब कर फौजी चला गया।

वर्तमान जीवन का आनंद लो

किसी गाँव में एक बूढ़ा आदमी रहता था। वह दुनिया के सबसे दुर्भाग्यशाली लोगों में से एक थे। पूरा गाँव उससे परेशान था। वह हमेशा उदास रहता था, वह लगातार शिकायत करता था और हमेशा बुरे मूड में रहता था।उम्र बढ़ने के साथ उसके शब्द ओर जहरीले होते जा रहे थे। लोग उससे बचते थे, क्योंकि उसकी शक्ल देखते ही खुद का मूड भी खराब हो जाता था।

लेकिन एक दिन, जब वह अस्सी साल का हो गया, तो एक अविश्वसनीय बात हुई। लोगो को ये सुनने में आया कि-"बूढ़ा आदमी आज खुश है, वह किसी भी चीज के बारे में शिकायत नहीं कर रहा है, मुस्करा रहा है, और यहां तक कि उसका चेहरा भी चमक रहा है।"

पूरा गाँव इकट्ठा हो गया। सभी इस बदलाव के पीछे के कारण को जानने के इच्छुक थे। ग्रामीणों ने बूढ़े आदमी से पूछा,"बाबा आपको ये क्या हो गया। आपमें इतना बदलाव कैसे आया।"

बूढ़ा आदमी बोला, "कुछ खास नहीं। अस्सी साल तक मैं हर चीज़ को ठीक करने में लगा रहा, हर वक्त खुशी ढूंढने के पीछे भाग रहा था, लेकिन यह सब बेकार था और फिर मैंने खुशी के बिना जीने का फैसला किया और वर्तमान जीवन का आनंद लेना शुरू किया हैं। इसीलिए मैं अब खुश हूँ।

कविताएं

अखण्ड भारत

आदि से अनंत तक
कण से प्रचंड तक।
सूत्र से स्वतंत्र तक
भारत है अखंड तक।।
परशु से श्रीराम तक
घन से धन्श्याम तक।
प्रेम से परिणाम तक
भारत है विज्ञान तक।।
शेष अब अवशेष है
अंतरिक्ष नवमेश है।
शक्ति अब विशेष है
भारत अब अनिमेष है।।

महेन्द्र प्रताप सिंह (आउटसोर्स कार्मिक)

पॉलिथीन से नुकसान

यह पॉलिथीन करे प्रदूषण, आओ इसे हटाएं।

करती है नुकसान बहुत यह, इसे न हाथ लगाएं।

कोई भी खाने की चीजें, इसमें भरकर न लाएं।

जो कुछ भी लाना हो, कपड़े के थैले में लाएँ।

शुद्ध वायु को दूषित करती, इसे न आग लगाएँ।

जल-थल की सुन्दरता हरती, आओ इसे ठुकराएँ।

विकट शत्रु है यह जीवन की, इसे न मित्र बनाएँ।

घातक है जन-जन जीवन की, इसे जल्दी दूर भगाएँ।

पेड़ लगाएँ, पर्यावरण बचाएँ

कौआ उड़ रहा है गगन में,न डाल मिली न छाँव।

बंजर हो गई सारी धरती, न खेत मिला न गाँव।।

सूखा गला है, सुबह से हूँ भूखा, नदी मिली ना नहर।

कर लूँ जहाँ बैठकर आराम, ऐसी कोई डाल ना मिली।।

कहाँ मैं जाऊं-जाऊं क्या मैं खाऊँ कौआ कहता-कहता मर गया।

सुनकर उसकी काँव-काँव, मेरा मन तो डर गया।।

आओ। आओ। एक शपथ उठाएँ, हरियाली फैलाएँ पर्यावरण बचाएँ।

अपने घर आँगन में, एक-एक पौधा जरूर लगाएँ।।

मेहरबान सिंह चौहान
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

काश मैं बन सकता

काश मैं बन सकता, तो बनना चाहता हूँ वृक्ष

दिन की आपाधापी या रात का सन्नाटा, जड़ से खड़ा रहता है,

उम्मीदों से कोसों दूर, बगैर शिकवे के शांत रहता है

जो सहता है चुपचाप चिलचिलाती धूप, लेकिन देता शीतलता खूब

झेलता है बिजली आंधी बरसात के थपेड़ों को, परन्तु देता है फल खाने को

और ह्रदय विशाल लिए हुए निःस्वार्थ सेवा करता है।

काश मैं बन सकता, तो बनना चाहता हूँ जल नदी का

प्रवाह में बहता जाता है प्यासों की प्यास तृप्त करता जाता है

बावजूद गंदगी को समेटे हुए वेग की धारा में बहता है

सबकुछ अपने में समा लेता है और जल को स्वच्छ करता जाता है

सभी को एक समान जल प्रदान करता जाता है

मनुष्य के मन को स्वच्छ करने का पाठ पढ़ाया जाता है।

काश मैं बन सकता, तो बनना चाहता हूँ झोंका हवा का

शवासों में सांसें बनकर उतर जाता है

जीवन को जीवित बना गतिमान हो जाता है

बूंद पसीने की अपने में समा ले जाता है

सुकुन ठंडक का दे जाता है

मनुष्य को शांत रहने का पाठ पढ़ा जाता है।

काश मैं बन सकता, तो बनना चाहता हूँ तराजू सच्चाई का

अच्छाई और बुराई को सही राही तौल सके

मूल्यों का सही हक अदा कर सके

बेइमानी, भ्रष्टाचार, धोखाधड़ी को माप से अपने मिटा सके

संसार को ईमानदारी का पाठ पढ़ा सकूँ।

काश मैं बन सकता, तो बनना चाहता हूँ प्रकाश सूर्य का

अधंकार को दूर करता है उजाले को फैलाता है

और अपने प्रकाश से सभी को चमकाता है

न सरहद की बंधिशों में उलझता है

न जाति धर्म ऊच नीच अमीर गरीब को मानता है

किसी भेदभाव को नहीं मानता।

मंदिर से मस्जिद तक और गुरूद्वारे से गिगिजाघर तक,

एक समान प्रकाश फैलाता है

पूरे संसार को किरणों से अपनी महकाता है सभी सुख पहुंचाता है

मनुष्य को सच्ची नैतिकता का पाठ पढ़ाता है

विकास किशोर सक्सेना
निजी सचिव

कूटने से बढ़ती है - "इम्युनिटी पॉवर"*

मैंने काफी बुजुर्ग दादा जी से पूछा

कि पहले लोग इतने बीमार नही होते थे ?
जितने आज हो रहे है ....

तो दादा जी बोले बेटा पहले हम हर चीज को कूटते थे
जबसे हमने कूटना छोड़ा है, तबसे ही हम सब बीमार होने लग गए है.....

मैंने पूछा :- वो कैसे ? दादा जी मुस्कुराते हुए

जैसे पहले खेत से अनाज को कूट कर घर लाते थे ...
घर में मिर्च मसाला कूटते थे ....
कभी कभी बड़ा भाई छोटे भाई को .... कूट देता था ....

और जब छोटा भाई   उसकी शिकायत
माँ से करता था .....   तो माँ.. बड़े भाई   कूट देती थी ......
और कभी कभी तो   दादा जी भी   पोते को कूट देते थे ......
यानी कुल मिलाकर   कूटने का सिलसिला
निरंतर चलता   रहता था ......

कभी माँ.. बाजरा कूट कर शाम को खिचड़ी बनाती थी .....
पहले हम कपडे भी कूट कूट कर धोते थे .....
स्कूल में मास्टर जी भी जमकर कूटते थे ....
जहाँ देखो वहां पर कूटने का काम चलता रहता था .....

जिससे कभी कोई   बीमारी नजदीक नही आती थी ......
सबका इम्युनिटी पॉवर   मजबूत बना रहता था ...

जब कभी बच्चा सर्दी में नहाने से मना करता था .....

तो माँ पहले उसे.. कूटकर उसकी इम्युनिटी पॉवर बढ़ाती थी
और फिर नहलाती थी ...

जब कभी बच्चा   खाना खाने से मना करता था .....

तब भी माँ पहले
कूटती थी
फिर खाना खिलाती थी .....

स्कूल से शिकायत आती तो
पिताजी कूट देते थे

स्कूल जाने में आना कानी की तो
मां कूट देती थी

ऐसे ही सबका
इम्युनिटी पॉवर कायम
रहता था .....

तो कुल मिलाकर
सब कुटाई की
महिमा है
जो आज कल
बंद हो गयी है
जिससे हम सब बीमार
ज्यादा रहने लग गए है !

😂🤣😂
इसी को कहते हैं "कूट नीति"
👍👍🎊

राजभाषा पुरस्कार

राजभाषा कीर्ति पुरस्कार

राजभाषा नीति की श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा तेल उद्योग विकास बोर्ड को वर्ष 2021– 2022 के दौरान राजभाषा कीर्ति पुरस्कार हेतु बोर्ड/ संस्थानों आदि की श्रेणी के अंतर्गत "क" क्षेत्र में द्वितीय पुरस्कार से सम्मनित किया गया

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, नोएडा द्वारा पुरस्कार

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, नोएडा द्वारा वर्ष 2020–21 में राजभाषा कार्यान्वयन हेतु प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया।

राजभाषा गतिविधियां

विश्व हिन्दी दिवस 10 जनवरी 2023

विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर दिनांक 10 जनवरी, 2023 को राजभाषा ई–पत्रिका "अनुभूति" के 19वें अंक का विमोचन सचिव महोदया के कर–कमलों द्वारा किया गया। पत्रिका का उद्देश्य हिन्दी लेखन को प्रेरित करने के साथ-साथ हिन्दी के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करना है|

अन्य गतिविधियां

तेल उद्योग विकास बोर्ड में आयोजित विभिन्न कार्यक्रम

स्थापना दिवस समारोह (13 जनवरी 2023)

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस (8 मार्च 2023)

विश्व पर्यावरण दिवस(5 जून 2023)

जागरूकता कार्यक्रम (26 अप्रैल 2023)

ई– आफिस पोर्टल पर काम कैसे करें (18 मई 2023)

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस (21 जून 2023)

तनाव प्रबंधन और आत्म जागरूकता (24 जुलाई, 2023)

स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त, 2023)

हिन्दी कार्यशाला

दिनांक 28 जून 2023

“कम्प्यूटर पर हिन्दी में काम कैसे करें तथा बोलकर हिन्दी में टाइप कैसे करें ”

तेल उद्योग विकास बोर्ड में राजभाषा नियमानुसार प्रत्येक तिमाही में नियमित रूप से हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। इसी श्रृंखला में दिनांक 28 जून 2023 को “कम्प्यूटर पर हिन्दी में काम कैसे करें तथा बोलकर हिन्दी में टाइप कैसे करें ” विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें व्याख्यान देने के लिए संसद सचिवालय से हरीश जैन तकनीकी (अनुवाद) विशेषज्ञ को आमंत्रित किया गया। कार्यशाला में ओआईडीबी के सभी कार्मिकों ने भाग लिया।

श्री हरीश जैन ने कम्प्यूटर पर हिन्दी में काम कैसे करें तथा बोलकर हिन्दी में टाइप कैसे करें पर विस्तृत जानकारी दी एवं हिन्दी टाइपिंग और हिन्दी में कार्यालयी कार्य को आसान एवं सुगम बनाने के लिए बोल कर कैसे टाइप करें, अनुवाद के लिए विभिन्न सॉफ्टवेयर, हिन्दी में वर्तनी चैक करना, आदि के बारे में विस्तार से बताया। सभी कार्मिकों से बोल कर टाइप करने का अभ्यास भी कराया। जिससे फाइलों पर हिन्दी में काम करने में सुविधा होगी। कार्यशाला अत्यंत ज्ञानवर्धक रही।

राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख निदेश

1. राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएं, प्रशासनिक व अन्य रिपोर्ट, प्रेस विज्ञप्तियां, संसद के किसी सदन या दोनों सदनों के समक्ष रखी जाने वाली प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्ट व सरकारी कागजात, संविदा, करार, अनुज्ञप्तियां, अनुज्ञापत्र, निविदा सूचनाएं और निविदा प्रपत्र द्विभाषिक रूप में, अंग्रेजी और हिंदी, दोनों में जारी किए जाएं राजभाषा नियम, 1976 के नियम 6 के अंतर्गत ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्ति का दायित्व यह सुनिश्चित करना होगा कि ऐसे दस्तावेज हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार, निष्पादित अथवा जारी किए जाएं।

2. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 5 के अनुसार केंद्र सरकार के कार्यालयों से हिंदी में प्राप्त पत्रादि का उत्तर हिंदी में ही दिया जाना है।

3. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 10(4) के अनुसार केंद्र सरकार के जिन कार्यालयों के 80 प्रतिशत कार्मिकों ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया हो, उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएं इसके अंतर्गत अधिसूचित बैंकों की शाखाओं में निम्नलिखित कार्य हिंदी में किए जाएं:-

ग्राहकों द्वारा हिंदी में भरे गए आवेदनों और ग्राहकों की सहमति से अंग्रेजी में भरे गए आवेदनों पर जारी किए जाने वाले मांग ड्राफ्ट, भुगतान आदेश, क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड, सभी प्रकार की सूचियां, विवरणियां, सावधि जमा रसीदें, चैक बुक संबंधी पत्रादि, दैनिक बही, मस्टररोल, प्रेषण बही, पास बुक, लॉग बुक में प्रविष्टियां, प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र, सुरक्षा एवं ग्राहक सेवा संबंधी कार्य, नये खाते खोलना, लिफाफों पर पते लिखना, कर्मचारियों के यात्रा भत्ते, अवकाश, भविष्य निधि, आवास निर्माण अग्रिम, चिकित्सा सबंधी कार्य, बैठकों की कार्यसूची, कार्यवृत्त आदि।

4. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 8(4) के अनुसार केंद्र सरकार, ऐसे अधिसूचित कार्यालयों के हिंदी में प्रवीणता प्राप्त अधिकारियों/कर्मचारियों को टिप्पण, प्रारूपण और अन्य उन शासकीय कार्यों को केवल हिंदी में करने के लिए आदेश जारी कर सकती है, जैसा कि आदेश में विनिर्दिष्ट हो।

5. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 11 के अनुसार सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया साहित्य, रजिस्टरों के प्रारूप और शीर्षक, नामपट्ट, साइन बोर्ड, पत्र शीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिंदी और अंग्रेजी में होंगी। तदनुसार, केंद्र सरकार के कार्यालयों से अपेक्षा है कि ये सभी मैनुअल, संहिताओं, एवं प्रक्रिया संबंधी असांविधिक साहित्य से संबंधित अन्य प्रक्रियात्मक साहित्य अनुवाद के लिए केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो में भेजें।

6. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 12 के अनुसार केंद्र सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व है कि वह यह सुनिश्चित करे कि राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम के प्रावधानों तथा इनके अधीन जारी किए गए निर्देशों का समुचित रूप से अनुपालन हो तथा इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त एवं प्रभावकारी जांच बिंदु बनाए जाएं।

7. राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने केंद्रीय हिंदी समिति की 31वीं बैठक के कार्यवृत में माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा दिए गए सुझावों पर पुनः बल दिया है। ये सुझाव है सरकारी हिंदी और सामाजिक हिंदी के अंतर को कम करना, देश की दूसरी भाषाओं से हिंदी को और समृद्ध करने के लिए उपाय करना, दूसरी भाषाओं के अच्छे शब्दों को हिंदी में ग्रहण करना, दूसरी भारतीय भाषाओं से अच्छे शब्दों को खोजकर हिंदी भाषा में जोड़ना, हिंदी में अनुवाद सरल भाषा में सुनिश्चित करना जिससे सरकारी भाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में बाधक नहीं, सहायक हो।

8. राजभाषा विभाग ने भारत सरकार के सभी सचिवों/विभिन्न सरकारी संगठनों के प्रमुखों से आग्रह किया है कि जब वे प्रत्येक माह वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक की अध्यक्षता करें तो वे उनमें हिंदी में सरकारी काम-काज में हुई प्रगति की भी समीक्षा करें और अपने संगठन में राजभाषा अधिनियम तथा नियमों के विभिन्न उपबंधों के कार्यान्वयन के बारे में चर्चा करें। साथ ही, संयुक्त सचिव (प्रशासन) संगठन के प्रशासनिक प्रमुख को हिंदी कार्यान्वयन का तथा वर्ष की प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की अध्यक्षता करने का उत्तरदायित्व सौंपा जाए।

9. कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा का संवर्ग गठित होना चाहिए, जो कि कुल पदों के अनुरूप हो। मंत्रालयों/विभागों के अधीनस्थ कार्यालयों के हिंदी पदाधिकारियों को केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के समान वेतनमान व पदनाम दिए जाएं।

10. अधीनस्थ सेवाओं की भर्ती परीक्षाओं में अंग्रेजी के अनिवार्य प्रश्न-पत्र को छोड़कर शेष विषयों के प्रश्न-पत्रों के उत्तर हिंदी में भी देने की छूट दी जाए और ऐसे प्रश्न-पत्र द्विभाषी रूप से, हिंदी तथा अंग्रेजी, दोनों भाषाओं में उपलब्ध कराए जाएं। साक्षात्कार या मौखिक परीक्षा में उम्मीदवारों को हिंदी में उत्तर देने की छूट दी जाए।

11. केंद्र सरकार के कार्यालयों द्वारा सभी सेवाकालीन, विभागीय तथा पदोन्नति परीक्षाओं में (अखिल भारतीय स्तर पर परीक्षाओं सहित) अभ्यर्थियों को प्रश्न पत्रों के उत्तर हिंदी में देने का विकल्प दिया जाए। प्रश्न पत्र अनिवार्यतः दोनों भाषाओं, हिंदी और अंग्रेजी, में तैयार कराए जाएं। जहां साक्षात्कार लिया जाना हो, वहां अभ्यर्थियों को पूछे गए प्रश्नों का उत्तर हिंदी में देने की छूट दी जाए।

12. सभी प्रकार की वैज्ञानिक तकनीकी संगोष्ठियों तथा परिचर्चाओं आदि में वैज्ञानिकों आदि को राजभाषा हिंदी में शोध पत्र पढ़ने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित किया जाए। उक्त शोध पत्र संबंधित मंत्रालय/विभाग और कार्यालय आदि के मुख्य विषय से संबंधित हों।

13. सभी मंत्रालय/विभाग/कार्यालय आदि हिंदी संगोष्ठी का आयोजन करें।

14. 'क' तथा 'ख' क्षेत्रों में सभी प्रकार का प्रशिक्षण, चाहे वह अल्पावधि का हो अथवा दीर्घावधि का, सामान्यतः हिंदी माध्यम से हो। 'ग' क्षेत्र में प्रशिक्षण देने के लिए प्रशिक्षण सामग्री हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार कराई जाए और प्रशिक्षणार्थी की मांग के अनुसार हिंदी या अंग्रेजी में उपलब्ध कराई जाए

15. राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा कोई भी गैर सरकारी संस्था केंद्र सरकार के कर्मचारियों को राजभाषा का प्रशिक्षण देने के लिए अधिकृत नहीं की गई है। राजभाषा विभाग के अंतर्गत प्रशिक्षण केंद्र पहले से ही देश भर में काम कर रहे हैं जो केंद्र सरकार के अधिकारियों व कर्मचारियों को विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण निःशुल्क देते हैं एवं राजभाषा पर विचार-विमर्श के लिए कार्यशालाओं का आयोजन करते हैं। राजभाषा विभाग के निर्देशों के अनुसार केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों द्वारा संबंधित कार्यालयों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं। राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर 'लीला' राजभाषा के माध्यम से अंग्रेजी के अतिरिक्त 14 भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी भाषा का प्रशिक्षण ऑनलाइन दिए जाने की सुविधा उपलब्ध है। अतः गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा

आयोजित किए जा रहे राजभाषा के प्रशिक्षण एवं कार्यशालाओं में भाग लेने के लिए सरकारी कोष से अनावश्यक धन खर्च करना उचित नहीं है।

16. विभिन्न कार्यालयों में हिंदी में कार्य करने में आ रही कठिनाइयों को दूर करने के लिए हिंदी कार्यशालाओं के आयोजन के संबंध में नए दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं। नए दिशा-निर्देशों के अनुसार कार्यशाला की न्यूनतम अवधि एक कार्य दिवस की होगी। कार्यशाला में न्यूनतम दो तिहाई समय कार्यालय से संबंधित विषयों पर हिंदी में कार्य करने का अभ्यास करवाने में लगाया जाए।

17. केंद्र सरकार के कार्यालयों की मांग पर केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से भी हिंदी भाषा, हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि का प्रशिक्षण दिया जाता है। केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा भी अनुवादकों को प्रशिक्षण देने के लिए इसी प्रकार के प्रबंध किए गए हैं।

18. केंद्र सरकार के कार्यालयों में जब तक हिंदी टंककों व हिंदी आशुलिपिकों से संबंधित निर्धारित लक्ष्य प्राप्त नहीं कर लिए जाते, तब तक उनमें केवल हिंदी टंकक व हिंदी आशुलिपिक ही भर्ती किए जाएं।

19. अनुवाद कार्य तथा राजभाषा नीति के कार्यान्वयन से जुड़े सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो में अनिवार्य अनुवाद प्रशिक्षण हेतु नामित किया जाए। ऐसे अधिकारियों/कर्मचारियों को भी अनुवाद के प्रशिक्षण के लिए नामित किया जा सकता है, जिन्हें स्नातक स्तर पर हिंदी-अंग्रेजी दोनों भाषाओं का ज्ञान हो तथा जिनकी सेवाओं का उपयोग कार्यालय द्वारा अनुवाद कार्य के लिए किया जा सकता है।

20. अनुवादकों को, मानक शब्दकोश (अंग्रेजी-हिंदी व हिंदी-अंग्रेजी) तथा अन्य तकनीकी शब्दावलियां जैसी सहायक सामग्रियां उपलब्ध कराई जाएं।

21. भारतीय प्रशासनिक सेवा और अन्य अखिल भारतीय सेवा के अधिकारियों के लिए लाल बहादर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, मसूरी में प्रशिक्षण के दौरान हिंदी भाषा का प्रशिक्षण अनिवार्य रूप से दिया जाता है ताकि सरकारी कामकाज में वे इसका प्रयोग कर सकें। तथापि, अधिकांश अधिकारी सेवा में आने के पश्चात सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग नहीं करते। इससे उनके अधीन कार्य कर रहे अधिकारियों/कर्मचारियों में सही संदेश नहीं जाता। परिणामस्वरूप, सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग अपेक्षित मात्रा में नहीं हो पाता। केंद्र सरकार के कार्यालयों के वरिष्ठ अधिकारियों का यह संवैधानिक दायित्व है कि वे सरकारी कामकाज में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करें। इससे उनके अधीन कार्य कर रहे अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रेरणा मिलेगी तथा राजभाषा नीति के अनुपालन में गति आएगी।

22. केंद्र सरकार के सभी कार्यालय हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए चलाई गई विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं का अपने संबद्ध एवं अधीनस्थ कार्यालयों में भी व्यापक प्रचार-प्रसार करें ताकि अधिक से अधिक अधिकारी/कर्मचारी इन योजनाओं का लाभ उठा सके और सरकारी कामकाज में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में हो।

23. केंद्र सरकार के सभी कार्यालय अपने दायित्वों से संबंधित विषयों पर हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन को प्रोत्साहित करने तथा अपने विषयों से संबधित शब्द भंडार को समृद्ध करने के लिए आवश्यक कदम उठाएं।

24. केंद्र सरकार के कार्यालय अपने कार्यालय में हिंदी में कार्य का माहौल तैयार करने के लिए हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन कर रहे हैं। इन पत्रिकाओं में कार्यालय की सामान्य गतिविधियों तथा उस कार्यालय के कामकाज से संबंधित मौलिक आलेख प्रकाशित किए जाएं। साथ ही, राजभाषा नीति के प्रमुख प्रावधानों का भी उल्लेख अवश्य हो। केंद्र सरकार के कार्यालयों से अपेक्षा की जाती है कि वे इन पत्रिकाओं के ई-वर्जन तैयार करें और इन्हें राजभाषा

विभाग द्वारा उपलब्ध कराए गए प्लेटफॉर्म "ई-पत्रिका पुस्तकालय" पर अपलोड करें ताकि गृह-पत्रिकाएं पाठकों को सहज तरीके से प्राप्त हो सकें।

25. यह देखा गया है कि अनेक विभागों द्वारा वेबसाइट पर या तो सूचना हिंदी में नहीं दी जाती या कुछ मामलों में यह पूर्णतया हिंदी में उपलब्ध नहीं है। अतः वेबसाइट हिंदी में विकसित और अद्यतित करवाएं।

26. राजभाषा विभाग द्वारा केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान के माध्यम से हर वर्ष कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने के लिए 5 दिवसीय बेसिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करवाया जाता है। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में अधिक से अधिक अधिकारियों/कर्मचारियों को नामित करें। प्रशिक्षण कार्यक्रम पूरा होने के बाद प्रशिक्षु कंप्यूटर पर हिंदी में काम कर सकेंगे। कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी

27. राजभाषा विभाग द्वारा आधुनिक ज्ञान / विज्ञान की विभिन्न विधाओं में मौलिक रूप से हिंदी में पुस्तक लेखन को प्रोत्साहित करने एवं राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से "राजभाषा गौरव पुरस्कार" दिए जाते हैं। राजभाषा के प्रयोग में बेहतर प्रगति दर्ज करने वाले मंत्रालय/विभाग, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम, बोर्ड/ स्वायत्त निकाय/ ट्रस्ट आदि, राष्ट्रीयकृत बैंक, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति तथा हिंदी गृह पत्रिकाओं के लिए "राजभाषा कीर्ति पुरस्कार" राजभाषा विभाग द्वारा दिए जाते हैं। इन दोनों पुरस्कार योजनाओं की जानकारी राजभाषा विभाग की वेबसाइट www.rajbhasha.gov.in पर उपलब्ध है।

28. राजभाषा विभाग ने अपनी वेबसाइट पर विभिन्न संस्थाओं के लिंक उपलब्ध कराए हैं जिनके माध्यम से इन संस्थाओं की शब्दावली देखी जा सकती है। इस संबंध में यदि कार्यालयों द्वारा कोई अपनी शब्दावली तैयार की गई है तो वे उसे राजभाषा विभाग से साझा करें ताकि अन्य कार्यालय भी लाभान्वित हो सकें।

29. राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर "ई-सरल हिंदी वाक्यकोश" शीर्षक के अंतर्गत सामान्यतः अंग्रेजी में प्रयोग होने वाले वाक्यों के हिंदी अनुवाद दिए गए हैं जिनके प्रयोग से अधिकारी फाइलों पर सामान्य टिप्पणियाँ आसानी से हिंदी में लिख सकते हैं।

30. अंतरराष्ट्रीय संधियों और करारों को अनिवार्य रूप से हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार कराया जाए। विदेशों में निष्पादित संधियों और करारों के प्रामाणिक अनुवाद तैयार कराकर रिकॉर्ड के लिए फाइल में रखे जाएं।

31. हिंदीतर राज्यों में बोर्ड, साइन बोर्ड, नामपट्ट तथा दिशा संकेतकों के लिए क्षेत्रीय भाषा, हिंदी तथा अंग्रेजी, इसी क्रम में, प्रयोग की जानी चाहिए।

32. प्रशिक्षण और कार्यशालाओं सहित राजभाषा हिंदी संबंधी कार्य कर रहे अधिकारियों/कर्मचारियों को कार्यालय में बैठने के लिए अच्छा व समुचित स्थान एवं अन्य आवश्यक सुविधाएं भी उपलब्ध कराई जाएं ताकि वे अपने दायित्वों का निर्वाह ठीक तरह से कर सकें।

33. हमें अपने कार्य-व्यवहार में आम जीवन में प्रचलित शब्दों के प्रयोग पर बल देना चाहिए ताकि सामान्य नागरिक सरकारी नीतियों/ कार्यक्रमों के बारे में सरल हिंदी में जानकारी प्राप्त कर सके।

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्राइज़ से अपने साथियो में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा! जय हिन्दी !